CHETANA
INTERNATIONAL JOURNAL OF EDUCATION (CIJE)
Peer Reviewed/Refereed Journal
(ISSN: 2455-8729 (E) / 2231-3613 (P))
Impact Factor
SJIF 2023 - 7.286

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

First draft received: 12.06.2023, Reviewed: 18.06.2023, Accepted: 26.06.2023, Final proof received: 30.06.2023

अनपढ़ जाट पढ़ा जैसा, पढ़ा जाट खुदा जैसा

डॉ .रामकुमार सिंह, *आचार्य, हिन्दी*
डॉ .राजेन्द्र कुमार, *आचार्य, राजनीति विज्ञान*
राजकीय कला महाविद्यालय, सीकर
Email-ramkumarsingh 358@gmail.com, Mob.- 94601 66640

सारांश

लार्ड बेकन की एक प्रसिद्ध उक्ति है कि किसी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता तथा उसकी अन्तरात्मा का दर्शन उसकी कहावतों से ही होता है। किसी देश विशेष की कहावतों से उस देश के इतिहास, रीति-रिवाज, धारणाएँ, विश्वास, जीवनपद्धति आदि का ज्ञान हमें होता है। कहावतों के अध्ययन से हमें यह - भी जानकारी मिलती है कि उस देश का कितना अधिक सम्बन्ध दंतकथा, इतिहास और काव्य से है। देवीदेवताओं की पौराणिक गाथाओं के असंख्य प्रसंग तथा इतिहास की अनेक घटनाओं की - जानकारी हमें इन कहावतों से मिलती है। ऐसी बहुत सी कहावतें हैं, जिनका सम्बन्ध इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं से है जो बाद में साहित्य, इतिहास और लोगों की जुबान पर चढ़कर लोक में प्रचलित हो गई। ऐसी ही एक कहावत हैअनपढ़ जाट पढ़े जैसा" -, पढ़ा जाट ख़ुदा जैसा। इस कहावत का " रोचक इतिहास हैं जो दिल्ली के बादशाह बलबन से जुड़ा हुआ है।

मुख्य शब्द : बादशाहत, *अनपढ़, पौराणिक गाथा आदि.*

लार्ड बेकन की एक प्रसिद्ध उक्ति है कि किसी राष्ट्र की प्रतिभा, विदग्धता तथा उसकी अन्तरात्मा का दर्शन उसकी कहावतों से ही होता है। किसी देश विशेष की कहावतों से उस देश के इतिहास, रीति-रिवाज, धारणाएँ, विश्वास, जीवनपद्धति आदि - का ज्ञान हमें होता है। कहावतों के अध्ययन से हमें यह भी जानकारी मिलती है कि उस देश का कितना अधिक सम्बन्ध दंतकथा, इतिहास और काव्य से है। देवीदेवताओं की - पौराणिक गाथाओं के असंख्य प्रसंग तथा इतिहास की अनेक घटनाओं की जानकारी हमें इन कहावतों से मिलती है। ऐसी बहुत सी कहावतें हैं, जिनका सम्बन्ध इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं से है जो बाद में साहित्य, इतिहास और लोगों की जुबान पर चढ़कर लोक में प्रचलित हो गई। ऐसी ही एक कहावत हैअनपढ़ जाट पढ़े जैसा" -, पढ़ा जाट ख़ुदा जैसा। " इस कहावत का रोचक इतिहास हैं जो दिल्ली के बादशाह बलबन से जुड़ा हुआ है।

बात उस समय की है जब भारत पर बलबन की बादशाहत थी। बलबन ने 1266 ई से .1287 ईतक भारत पर शा .सन किया। वह गुलाम वंश का अंतिम शक्तिशाली शासक था। उसके दरबार में प्रसिद्ध शायर और कवि अमीर खुसरो भी था। बलबन एक - न्यायप्रिय बादशाह के रूप में इतिहास में प्रसिद्ध हुआ है। यह बादशाह अल्तमश का (इल्तुतमिश) गुलाम था। अल्तमश भी न्याय के लिए प्रसिद्ध था। रजिया सुलतान अल्तमश की ही पुत्री थी। गुलाम नासिरुद्दीन के बाद दिल्ली की गद्दी पर 1266 ई में बैठा और .1287 ईतक . दिल्ली का बादशाह रहा। इससे सम्बन्धित एक इतिहास

प्रसिद्ध घटना घटित हुई। उस घटना से एक कहावत प्रसिद्ध हुई वो घटना इस प्रकार है -

'अनपढ़ जाट पढ़ा जैसा और पढ़ा जाट खुदा जैसा' यह कहावत आज भी पूरे उत्तरी भारत में प्रचलित है। हुआ यूँ कि बलबन के दरबार में एक अमीर था। उस अमीर के तीन लड़के थे। अमीर के पास 19 घोड़े थे। अमीर की मृत्यु हो गई, किंतु मृत्यु से पूर्व उसने अपनी वसियत में 19 घाड़ों के बंटवारे का भी ब्यौरा लिखा। अमीर ने अपनी वसियत में 19 घोड़ों के बँटवारे का ब्यौरा इस प्रकार लिखा कि बड़े पुत्र को इनमें से आधे घोड़े मिलें, मझले को चौथाई घोड़े और छोटे बेटे को इन 19 घोड़ो का पाँचवा हिस्सा मिले ।

अमीर के तीनों बेटे वसियतानुसार इन घोड़ों का बँटवारा नहीं कर पाये और बादशाह बलबन के दरबार में इस समस्या को सुलझाने के लिए फरियाद की। बादशाह ने अपने (प्रार्थना) सभी दरबारियों से सलाह ली, लेकिन कोई भी दरबारी इस समस्या को हल नहीं कर सका, होता भी कैसे ? 19 घोड़ो को वसियतानुसार कैसे तीन हिस्सों में बांटा जा सके ? उसी समय बादशाह बलबन के दरबार में उसका दरबारी कवि अमीर खुसरो भी था। बार बलबन ने अमीर खुसरो से इस समस्या का हल पूछा तो खुसरो, ने कहा कि मैंनें जाटों के इलाकों का खूब भ्रमण किया है और उनकी पंचायतों में किये जाने वाले फैसलों को भी देखा है। अमीर खुसरो भ्रमणशील था तथा वह नयीनयी चीजें देखने-, नयीनयी बातें सीखने का - भी शौकीन था। खुसरों ने जाटों की सर्वखाप पंचायतों में होने वाले फैसले भी देखे थे। इस समस्या का हल कोई सर्वखाप का पंचही कर सकता है। अमीर खुसरो के कहने पर, बादशाह बलबन के दरबारियों ने कहा कि 19 घोड़ो का तो इस तरह बटवारा हो ही नहीं सकता। फिर भी अमीर खुसरो के कहने पर बादशाह ने अपने दूत को एक चिट्ठी (आदेश) .प्र.उ) जिला मुज्जफरनगर) देकर सर्वखाप मुख्यालय सौरम) गाँव भेजा । सौरम गाँव में प्राचीन समय से ही सर्वखाप पंचायत का मुख्यालय चला आ रहा था। आज भी सर्वखाप पंचायत का मुख्यालय सौरम गाँव मे ही है।

दूत सौरम गाँव पहुँचा और चिठ्ठी सर्वखाप पंचायत के पंचो को दी। सर्वखाप पंचायत ने फैसला करने के लिए अपने पंच चौधरी रामसहाय को दिल्ली भेजने का निर्णय लिया। चौधरी रामसहाय अपने घोड़े पर सवार होकर बादशाह के दरबार में दिल्ली पहुँचा और बादशाह बलबन ने अपने सभी दरबारियों को दिवाने आम में एकत्रित होने के लिए कहा। दरबार में ही उस अमीर के तीनों लड़कों को भी बुलवा लिया तथा 19 घोड़ों को भी दरबार में मंगवा कर बंधवा दिया। चौधरी रामसहाय ने अपना परिचय देकर कहना शुरु किया यह तो पता ही है " कि राजा और प्रजा में बाप-बेटे का सम्बन्ध होता है। प्रजा की सम्पति पर राजा का भी हक होता है। इस नाते मेरे घोड़े पर भी बादशाह का हक बनता है। इसलिए बादशाह मैं यह घोड़ा आपको भेंट करता हूँ और अपना घोड़ा इन 19 घोड़ो में मिला देना चाहता हूँ और इसके बाद मैं अपना फैसला सुनाऊँगा।' बादशाह ने चौधरी रामसहाय को इसकी इजाजत दे दी। चौधरी ने अपने घोड़े को 19 घोड़ों की कतार के आखिर में बाँध दिया। अब घोड़ों की संख्या 20 हो गई। चौधरी रामसहाय ने इन घोड़ों का बंटवारा इस प्रकार कियाबीस " - का आधा10 अर्थात10 घोड़े बड़े बेटे को दे दिए, बीस का चौथाई 05 अर्थात 05 घोड़े मझले बेटे को दे दिए तथा ,20 का पाँचवा हिस्सा 04 अर्थात 04घोड़े सबसे छोटे लड़के को दे दिए। इस प्रकार 10+05+4 = 19 घोड़ों का बंटवारा वसियतानुसार चौधरी रामसहाय ने कर दिया और 20 वाँ घोड़ा चौधरी रामसहाय का बच गया। बंटवारा करने के बाद चौधरी रामसहाय ने बादशाह बलबन से कहा कि जिस तरह " प्रजा की सम्पत्ति पर राजा का हक होता है उसी तरह राजा बादशाह :की सम्पत्ति पर प्रजा का हक भी होता है। अत न बादशाह बलब "आपकी इजाजत हो तो मैं मेरा घोड़ा ले लूँ। लेने की इजाजत दे दी और :ने चौधरी को अपना घोड़ा पुन चौधरी साहब का बड़ा मानसम्मान किया तथा पुरस्कार के - रूप में भेंट के साथ इस न्यायिक फैसले का लिखकर खरीता भी प्रदान किया।

चौधरी रामसहाय अपना घोड़ा लेकर अपने गाँव सौरम की ओर रवाना होने ही वाले थे कि तभी दरबार में मौजूद हजारों लोग खुशी से नाच उठे और अमीर खुसरों ने जोर से कहा कि अनपढ़ जा"ट पढ़ा जैसा, पढ़ा जाट खुदा जैसासारी भीड़ " पश्चिम -इसी पंक्ति को दोहराने लगी। तभी से यह कहावत उत्तर भारत के पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तरप्रदेश, राजस्थान आदि स्थानों पर फैल गई। बादशाह बलबन द्वारा चौधरी रामसहाय को दिया गया यह खरीता आज (प्रंशसा पत्र) भी मुज्जफरनगर के सौरम गाँव के सर्वखाप पंचायत मुख्यालय में मौजूद है। खाप पंचायतों का महत्व प्राचीन काल से - आज तक बना हुआ है।

यह कहावत प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो द्वारा जाटों के बारे में कही गई व उनकी खाप पंचायतों के फैसलों के बारे में कही गई है जो अक्षरसः सही है। अमीर खुसरो)1253 ई से . 1325 ईने गुलाम वंश के बादशाह नसीरुद्दीन से लेकर (. तुगलक वंश के बादशाहं गयासुद्दीन तुगलक तक केदरबार मे रहा । अमीर खुसरों ने अपने जीवन का अधिकांश समय दिल्ली में रहकर व्यतीत किया। दिल्ली के आसपास की - याँ जाबस्तिटों की बस्तियाँ थी और उनकी बोली खड़ी बोली हिन्दवी थी। उस समय मुसलमान इस देश में बाहरी लोग)इरानी, तुर्की, अफगानी, उजबकी तज्जाकीथे। उनकी भाषा (को न तो स्थानीय हिन्दुस्तानी समझते थे और न हिन्दुस्तानियों की भाषा ये मुसलमान लोग समझते थे। अतः हिन्दुओं और मुसलमानों में आपस में विचारविनिमय में - सहायता पहुँचाने के लिए अमीर खुसरोंने अरबीतु-फारसी-कीं और हिन्दी भाषा का एक शब्दकोष तैयार किया जो 'खालिक बारी' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। अमीर खुसरो जिज्ञासु प्रवृत्ति का व्यक्ति था। वह जाटों के इलाकों में घूमता रहता था और उनके पंचायतफैसले दे-खता और सुनता रहता था। -'खालिक बारी' में हिन्दी भाषा के जितने भी शब्द है उनमें से अधिकांश खड़ी बोली अर्थात जाटू भाषा के ही है। इस कोष से

राजकाज में भी सह-ायता मिली और दो भिन्न संस्कृतियों हिन्दू और मुस्लिम का आपस में मेलजोल भी बढ़ा और --विचारों का आदान प्रदान भी हुआ।

संदर्भ

1. प्रदीप शर्मा खुसरो - अमीर खुसरो -2018 - साक्षी प्रकाशन एस-16, नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032।
2. डॉ अमीर खुसरो और उनकी - भोलानाथ तिवारी . हिन्दवी रचनाएँ- 1985- प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।
3. उपेन्द्रनाथ शर्मा -जाटों का नवीन इतिहास -1977- मंगल प्रकाशन, गोविन्द राजियों का रास्ता, जयपुर-
4. डॉ - जाट इतिहास - नत्थन सिंह .2004 जाट समाज कल्याण-परिषद् एफ-13, डॉराजेन्द्र प्रसाद . कालोनी, तानसेन मार्ग, ग्वालियर (.प्र.म), 474002।